प्रातःक्लास 17/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

(आज बाप–दादा सबेरे 5 बजे प्रदर्शनी देखने लिए गये थे। वहां संगम, स्वर्ग़ की मॉडल्स देखकर आये तो आज मुरली में भी इस पर ही समझाया है कि अजन इसमें क्या–क्या बनाना चाहिए।) ओमशान्ति। मीठे–2 बच्चे प्रदर्शनी देखकर आते हैं तो बुद्धि में वही याद रहनी चाहिए कि हम कैसे शूद्र थे अभी ब्राह्मण बने हैं फिर देवता सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी बनेंगे। तुम बच्चों ने पद्रर्शनी में मॉडल्स भी रखी है। कलियुग और सतयुग की। अभी यह है संगमयुग। यह संगमयुगी मॉडल्स कैसे बीच में। 15–20 सफ़ेद पोश वाले बनाना चाहिए तपस्या में। जैसे सूर्यवंशी दिखाई है तो चन्द्रवंशी भी दिखाना पड़े। वह भी एक लाइन हो। यह मॉडल्स अच्छे हैं। बाबा ने तो आज ही देखी है। अच्छी है। ऐसा बनाना है जो मनुष्य समझ जायें यह ही तपस्या कर ऐसे बनते हैं। जैसे तुम्हारे शुरू के चित्र भी हैं ना। साधारण तपस्या के और भविष्य राजाई पद की। वैसे यह भी बनाना पड़े। जिन बच्चों के भविष्य के चित्र हैं उनको ही उनको ही फिर सफ़ेद पोशधारी बनाकर बिठाना है। तो तुम समझा सकेंगे। यह वह बनते हैं। दिखाना भी एक्युरेट है। हम ब्रह्मा कुमारियाँ यह राजयोग सीखकर यह बनते हैं। तो संगमयुग भी ज़रूर दिखाना पड़े। तुम बच्चे देरकार आते हो तो नॉलेज स(ा)रा दिन बुद्धि में रहनी चाहिए। तब ही ज्ञान सागर के बच्चे ज्ञान सागर तुम कहला सकते हो। अगर ज्ञान बुद्धि में रहे ही नहीं तो ज्ञान सागर थोड़े ही कहेंगे। सारा दिन इसमें ही लगा रहे तो बंधन भी टूटता जावे। हम अभी ब्राह्मण हैं। (फिर) देवता बनते हैं। अगर अच्छी रीत पुरुषार्थ न करेंगे तो क्षत्री(क्षत्रिय) कुल में चले जावेंगे। वैकुण्ठ देख भी न सकेंगे। मुख्य तो है ही वैकुण्ठ। वण्डर ऑफ (दी) वर्ल्ड सतयुग को कहा जाता है। .... इसलिए पुरुषार्थ करना है। तुम्हारा दोनों ही चीज़ होनी चाहिए। वह रंगीन वस्त्रों, गहनों आदि से सजाया हुआ और वह तपस्या का। तो समझेंगे यही सूक्ष्मवतन में बैठे हैं। ड्रेस तो बदल सकते हैं। फीचर्स तो बदल न सकेंगे। वह हुआ अपवित्र प्रवृति मार्ग। वह पवित्र प्रवृति मार्ग। वह विश्यिस मार्ग वह वायसलेस मार्ग। यह भी लिखना पड़े कलियुगी विश्यिस मार्ग, सतयुगी वायसलेस मार्ग। बाबा देखकर आये हैं तो ध्यान में ..... हैं क्या–2 होना चाहिए जिससे समझे कि यह स्थापना कर रहे हैं। यही फिर वह बनने वाले हैं। इस समय तुम थोड़े हो। जो मेहनत करेंगे वही पावेंगे ना। ब्राह्मण बनने वाले तो बहुत हैं ना। दिन–प्रतिदिन वृद्धि को पाते रहेंगे। सारा सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह बुद्धि में है। तब तो बाबा समझाते हैं ना क्या होना चाहिए। बुद्धि में है, तपस्या कर रहे हैं। फिर यह बनेंगे। इसको ही कहा जाता है स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठना; क्योंकि बुद्धि में तो स(ा)रा नॉलेज है ना। हम क्या थे फिर अभी क्या बन रहे हैं। स्टूडेन्ट्स टीचर को तो ज़रूर याद करेंगे ना। तुमको भी बाप को याद करना है। याद की यात्रा से ही पाप कटते हैं। आत्मा पवित्र हो जाती है तो फिर शरीर भी पवित्र मिलता है। जो शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं वही फिर देवता बनते हैं वही फिर असुर बनते हैं। देवता से असुर, असुर से देवता कैसे बनते हैं वह सारा दिखलाना है। बाबा नटशे.. ..... में बताते हैं। बड़ा मॉडल होना चाहिए। जितना बड़ा हो उतना अच्छा है; क्योंकि लिखना भी पड़ता है। संगमयुगी पुरुषोत्तम बनने वाले ब्राह्मण पुरुषोत्तम वास्तव में तुम हो ब्राह्मण; क्योंकि तुमको ही बाप बैठ पढ़ाते हैं। ऊपर भल चित्र भी हो शिवबाबा का। जो तुमको पढ़ाते हैं और तुम यह बनते हो। यह ब्रह्मा भी तुम्हारे साथ है। वह भी सफ़ेद पोशधारी स्टूडेन्ट्स है। रामराज्य को बहुत मानते हैं। गायन है ना राम राजा राम प्रजा..... सतयुग में तो धर्म का राज्य है नहीं। बाकी त्रेता में किचड़ा कर दिया है। क्षत्रियों का ग्लानी कर दी है। सूर्यवंशी की ग्लानी नहीं की है। तो यह भी लिखना पड़े राम राजा राम प्रजा धर्म का उपकार है। वहां के लिए फिर कितनी ग्लानी की है। बातें बैठ लिखी हैं। जो वहां होती ही नहीं। वह भी सेमी स्वर्ग़ है। वह स्वर्ग़। यह भी तुम लिख सकते हो सेमी स्वर्ग़; क्योंकि 14 कला है ना। उनको क्लीयर कर दो हम क्या बन रहे हैं। हम ही अपने लिए स्वराज्य की स्थापना कर रहे हैं। विश्व में शान्ति का

एक स्वराज्य जो सभी मांगते हैं वह हम स्थापन कर रहे हैं। यह तो तुम चित्रों आदि में एड कर सकते हो; क्योंकि तुम्हारे पास अभी आते तो रहेंगे। बाबा देखते हैं तो ख़्यालात चलती रहती है। तुम बच्चे घर जावेंगे तो फिर यह सभी बातें भूल जावेंगे; परंतु यह सभी बुद्धि में याद रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि प्रदर्शनी से बाहर निकले और खेल खलास। अच्छे–2 बच्चे जो पुरुषार्थ हैं उनकी बुद्धि में टपकना चाहिए। बाबा को टपकता रहता है ना। बुद्धि में सारा ज्ञान रहेगा तो बाप की भी याद रहेगी। उन्नति को पाते रहेंगे। अगर सतोप्रधान(तमोप्रधान) बनेंगे तो सतयुग में नहीं आवेंगे; इसलिए याद की यात्रा में अपन को अच्छी रीत पक्का रख(ना) है। तुम राजयोगी हो। तुमको बड़ी जटाएं हैं। राजयोगी और योगिन। यह सजा कर तपस्या का रूप दिखाना (है)। यह सभी समझने की बातें हैं। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म को छोड़ अपन को आत्मा निश्चय करो। बाकी सभी देह के सम्बंध को भूल जाओ। एक बाप को याद करो। वह तुमको बहुत मालदार बनाते हैं। जीते जी मर जाओ। बाप आकर जीते जी करना सिखलाते हैं। बाप कहते हैं– मैं कालों का काल हूँ। तुमको ऐसा मरना सिखलाता हूँ जो कब तुम्हारे दर पर काल आ न सके। वहां तो रावण राज्य ही नहीं। इस पर एक कहानी (भी) बैठ बनाई है। सिद्ध करते हैं कि सतयुग में कब काल खाता ही नहीं। उनको अमरपुरी कहा जाता है। रावण राज्य है ही नहीं। बाप तुमको अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। यह है मृत्युलोग। वह है अमरपुरी। यह है र(ाज)योग। तुम लिख दो प्राचीन भाारत का योग फिर से सिखाया जाता है। जो प्रदर्शनी आदि देखते हैं उनको ख़्(याल) करना चाहिए इसमें और क्या–2 एड करें। जिससे मनुष्य एक्युरेट समझे। इनमें प्रैक्टिकल बहुत अच्छी समझानी है। जो मॉडल्स बनाये हैं। यथा राजा–रानी तथा प्रजा तो उसमें आ ही जाते हैं। राम फ़ेल हुआ तो कहेंगे उनकी प्रजा भी फ़ेल हुआ(ई)। तुम लिख सकते हो समझाने लिए; परंतु देखा जाता है बिल्कुल ही बंद(र) बुद्धि हैं। समझते ही नहीं। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। मूल ज़ोर रखना ही है इस पर है। विश्व में पवित्रता, सुख, शान्ति फिर से कैसे स्थापन हो रही है सो तुम समझाते हैं। ऐसे। पर्चे तुम बांट सकते हो। विश्व में दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन हो रहा है आकर समझो। तु(म) अपने लिए ही करते हो। जितना मेहनत करते हो उतना ही पद पाते हो। वह भी नम्बरवार। यह भी दिख.... नम्बरवार कैसे–2 बनते हैं। प्रजा भी दिखाओ तो साहूकार प्रजा, सेकण्ड ग्रेड, थर्ड ग्रेड प्रजा भी दिखाओ। ऐसा .... एक्युरेट बनाओ जो पूरी अच्छी रीत समझ जाये। मेहनत तो करनी ही है। सेमी तो बाकी थोडा है। बाप .... बैठ थोड़े ही जावेगा। विनाश शुरू हुआ तो फिर चले जावेंगे। फिर ज्ञान थोड़े ही सुनावेंगे। ज्ञान है ही तुम्(हारे) लिए। तो तुम प्रदर्शनी में ऐसा समझाओ जो मनुष्य समझे हमको एक बाप को ही याद करना है। तब ही हम यह बन सकते हैं। नहीं तो फिर भक्ति मार्ग में आवेंगे। भक्ति है दुगर्ति। यह अच्छी रीत बुद्धि .... बिठाना है। तुम महारथी बच्चे हो तो तुम्हारी बुद्धि चलती है। मेल्स भी अच्छे हैं। नम्बरवन तो है जगदी(श) जो मैगज़ीन बनाते हैं। बृजमोहन को भी अच्छा लिखने का शौक है। शायद तीसरा भी कोई नि... आवे। जैसे तुम्हारे में महारथ हैं वैसे इनमें भी हैं। प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो जोड़ियाँ बनती हैं। फि(र) स्त्रियाँ, पुरुष बनती हैं, कोई पुरुष फिर स्त्रियाँ बनते हैं। ऐसे मत समझना बाबा ने सिर्फ़ फीमे(ल्स) का नाम लिया मेल्स का नहीं लिया। मेल्स भी बहुत ही अच्छे–2 हैं। यह कथा है ही सत्य ना. की ..... है; इसलिए विष्णु दिखाया है। दो बनते हैं ना लक्ष्मी और नारायण। हर बात तुम क्लीयर करते जावेंगे (दिन)–प्रतिदिन। बाप ज्ञान का सागर है। उस परमपिता परमात्मा में तो ज्ञान भरा हुआ है। जैसे गीत सु... हो, सारा रिकॉर्ड भरा हुआ है। यह भी ऐसे हैं। 8 वर्ष है। तो ज़रूर और भी माल होगा न। बाप पास जो मिलता रहेगा ड्रामा अनुसार। यह बच्चों की बुद्धि में चलना चाहिए। भल कुछ भी काम–काज करो, (हाथ) से भोजन बनाओ बुद्धि शिवबाबा पास हो। ब्रह्माभोजन भी तो पवित्र चाहिए ना। ब्रह्मा भोजन सो ..... भोजन ब्राह्मण ही बनाते हैं। जितना योग में रह बनाते हैं उतना ही भोजन में ताकत आ जाती है। .....

हे देवताएं भी ब्रह्मा भोजन की सराहना करते हैं जिससे ह्दय शुद्धि होता है। तो ब्राह्मण भी ऐसे होने चाहिए। अभी नहीं हैं; क्योंकि देरी है। अभी अगर ऐसे बन जाये तो तुम्हारी बहुत वृद्धि हो जावेगी; परंतु ड्रामा अनुसार धीरे–2 वृद्धि को पाना है। ऐसे भी ब्राह्मण निकलेंगे जो कहेंगे हम तो बाबा की याद में रह भोजन बनाते हैं। बाबा चैलेंज देते हैं ना ऐसा ब्राह्मण हो जो योग में रह भोजन बनावे। भोजन पवित्र होना चाहिए ना। भोजन पर बहुत मदार है। बाहर में बच्चों को नहीं मिलता है; इसलिए यहां आते हैं। बच्चे रिफ्रेश होवें तो भोजन मे रिफ्रेश हो। योग वाले फिर ज्ञानी भी होते हैं; इसलिए उनको भी बैज देते हैं। जब बहुत हो जावेंगे तो फिर यहां भी ऐसे ब्राह्मणियों को रख देंगे। अभी थोड़े हैं। नहीं तो महारथियों से भी भोजन पर होने चाहिए जो योग युक्त खाना बने। देवताएं भी समझते हैं, हम यह भोजन खाए देवता बने हैं। तो रुचि से तुम्हारे साथ मिलने लिए आते हैं। कैसे तुमसे मिलते हैं वो भी युक्ति है। सूक्ष्मवतन में वो और यह मिलते हैं। यह भी वण्डरफुल साक्षात्कार है। वण्डरफुल नॉलेज है। तो साक्षात्कार भी वण्डरफुल है अर्थ स(ि)हत। भक्ति मार्ग में तो साक्षात्कार बहुत मेहनत से होते हैं। नौधा भक्ति करते हैं सिर्फ़ दीदार के लिए। समझते हैं दीदार होगा तो हम मुक्ति को जावेंगे। उनको यह थोड़े ही पता है कि यह पढ़ाई से बने हैं। यह सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी पढ़ाई से बने हैं। बाकी जो इतने अनेक चित्र बनें हैं। ऐसे तो कुछ भी है नहीं। यह सभी है भक्ति मार्ग का प्रस्ताव। बड़ी भारी कारोबार है। अभी ज्ञान और भक्ति का राज़ तुम समझते हो। यह बाप ही समझाते हैं। वही स्प्रीचुअल फादर वही ज्ञान का सागर है। कल्प–2 पुरानी दुनियाँ को नई बनाना, राजयोग सिखाना बाप का ही काम है; परंतु सिर्फ़ गीता में नाम बदली कर दिया है। झूठी बातें सुनते–2 एकदम पत्थर बुद्धि बन पड़े हैं। बुद्धि मारी गई है। बाप आकर फिर से उस बुद्धि को जगाते हैं। बाप कहते हैं– यह भी कल्प–2 का खेल है। हम घर से यहां आते हैं पार्ट बजाने। झाड़ के तरफ भी बुद्धि चलनी चाहिए। कैसे, कि(स)को समझाया जाये। तुमको कहते हैं– क्या हम स्वर्ग़ में नही आवेंगे? बोलो, तुम्हारे धर्मस्थापक तो स्वग़ में आता(ते) ही नहीं। वह जब स्वर्ग़ में आवें तो तुम भी जाओ। हरेक धर्म का अपने–2 समय पर पार्ट है। यह वैरायटी धर्मों का नाटक बना हुआ है। बनाबनाया खेल है। इसमें कुछ कहने की दरकार ही नहीं रहती। मुख्य–2 धर्म दिखाये गये हैं। यह तो बच्चे जानते हैं यह चित्र आदि भी कोई नई(ये) नहीं हैं। कल्प–2 हूबहू ऐसे ही चलते आवेगा। विघ्न भी अनेक प्रकार के पड़ते हैं। मार–पीट आदि की भी विघ्न पड़ती है ना। बच्चों को कितना युक्ति से समझाया जाता है। बोलो भगवानुवाच है ना काम महाशत्रु है। हमको रात में स्वप्न में सा. होता है, विनाश भी देखने में आता है। बाप कहते हैं– बच्चे तुम पवित्र बनो, काम को जीतो। इस पर ही झगड़ा होता है। तुम बड़ों–2 को युक्ति से पकड़ो; क्योंकि बड़ा समझ जाये तो बड़े का आवाज़ भी बड़ा निकलता है। इसलिए बड़ों को पकड़ते हो। गर्वनर का नाम सुनकर चले आवेंगे; इसलिए युक्ति रची जाती है हो सकता है उनमें से कोई अच्छी रीत समझ जाए। बड़ों का नाम सुनकर ढेर हो जावेंगे। हो सकता है कोई बड़ा भी आ जाए। है बहुत मुश्किल। बाबा कितना लिखते हैं उद्घाटन जिससे कराओ उनको समझाओ ज़रूर कि ऐसे मनुष्य से देवता बन सकते हो। विश्व में शान्ति हो सकती है। स्वर्ग में है ही विश्व में शान्ति और सुख। ऐसे–2 भाषण करे और अखबार में पड़े तो तुम्हारे इतने ढेर आने लग पड़ेंगे जो तुमको नींद भी करने देंगे। सारा दिन तुम्हारा इसमें ही लग जाए। यह भी समय आने वाला है। सर्विस से, योग से बल आता है। तुम्हारी कमाई (है)। कमाई में थकावट कभी नहीं आएगी। उवासी दिवाला निकालने वाले खाते हैं। जो अच्छी रीत समझते हैं, याद में रहते हैं उनको उवासी नहीं आवेगी। स्वर्ग में तुमको उवासी नहीं आवेगी। बाप का वर्सा पा लिया तो फिर सोना, उठना, बैठना कायदे सिरे चलता है। आत्मा लीवर बन जाती है। अभी सलेन्डर को लीवर बनाना है। कोई बना सकते हैं कोई नहीं बना सकते हैं। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।